कक्षा – दसवीं
मित्रता निबन्ध

लेखक – रामचन्द्र शुक्ल (१८८९-१९४१)

प्रस्तुतकर्ता : डॉ.सुनील बहल

एम.ए.(संस्कृत,हिंदी),एम.एड.,पीएच.डी(हिंदी)

मित्रता (निबंध) आचार्य रामचंद्र शुक्ल (सन 1889-1941)

पाठ परिचय

प्रस्तुत निबंध 'मित्रता' में शुक्ल ने जीवन में मित्र के महत्त्व एवं उसके चुनाव में रखी जाने वाली सावधानियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। निबंधकार का मानना है कि मित्र का चरित्र हमारे जीवन को दूर तक प्रभावित करता है और हमारे समूचे जीवन पर गहरा प्रभाव डालता है। सच्चा और अच्छा मित्र हमें समयानुसार उचित सलाह देकर जहाँ हमारे कष्टों, दु:खों को दूर करके हमें जीवन में अच्छा बनने में सहायता दे सकता है वहीं मूर्ख और बुरे-आचरण वाला हमें गलत आदतों का शिकार बनाकर हमारे विनाश का कारण भी बन सकता है। निबंधकार की सलाह है कि उज्ज्वल और निष्कलंक बना रहने के लिए सोच-समझ कर सावधानी पूर्वक मित्र का चयन करना चाहिए, क्योंकि संगति का प्रभाव बहुत तेज़ी से और गहराई तक प्रभावित करने वाला होता है।

मित्रता

जब कोई युवा पुरुष अपने घर से बाहर निकलकर बाहरी संसार में अपनी स्थिति जमाता है, तब पहली कठिनता उसे मित्र चुनने में आती है। यदि उसकी स्थिति बिल्कुल एकांत और निराली नहीं रहती तो उसकी जान-पहचान के लोग धड़ाधड़ बढ़ते जाते हैं और थोड़े ही दिनों में कुछ लोगों से उसका हेल-मेल हो जाता है। यही हेल-मेल बढ़ते-बढ़ते मित्रता के रूप में परिणत हो जाता है। मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है, क्योंकि संगति का गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर बड़ा भारी पड़ता है। हम लोग ऐसे समय में समाज में प्रवेश करके अपना कार्य आरम्भ करते हैं, जब कि हमारा चित्त कोमल और हर तरह का संस्कार ग्रहण करने योग्य रहता है। हमारे भाव अपरिमार्जित और हमारी प्रवृत्ति अपरिपक्व रहती है। हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप में चाहे, उस रूप में ढाले-चाहे राक्षस बनाए चाहे देवता। ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं, क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है पर ऐसे लोगों का साथ करना और भी बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं, क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई नियंत्रण रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है।

दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है, उसका पता युवकों को प्राय: बहुत कम रहता है। यदि विवेक से काम लिया जाए तो यह भय नहीं रहता, पर युवा पुरुष प्राय: विवेक से कम काम लेते हैं। कैसे आश्चर्य की बात है कि लोग एक घोड़ा लेते हैं तो उसके सौ गुण-दोष को परख कर लेते हैं, पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और स्वभाव आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते। वे उसमें सब बातें अच्छी-ही-अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा देते हैं। हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस—ये ही दो-चार बातें किसी में देखकर लोग चटपट उसे अपना बना लेते हैं। हम लोग यह नहीं सोचते कि मैत्री का उद्देश्य क्या है? क्या जीवन के व्यवहार में उसका कुछ मूल्य भी है? यह बात हमें नहीं सूझती कि यह ऐसा साधन है, जिससे आत्मशिक्षा का कार्य बहुत सुगम हो जाता है। एक प्राचीन विद्वान का वचन है, "विश्वासपात्र मित्र से बड़ी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाए उसे समझना चाहिए कि खज़ाना मिल गया।" विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साहित होंगे, तब हमें उत्साहित करेंगे। सारांश यह है कि हमें उत्तमतापूर्वक जीवन-निर्वाह करने में हर तरह से सहायता देंगे।

सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य की-सी निपुणता और परख होती है, अच्छी-से-अच्छी माता का-सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए। छात्रावस्था में मित्रता की धुन सवार रहती है। मित्रता हृदय से उमड़ पड़ती है। पीछे के जो स्नेह-बंधन होते हैं, उनमें न तो उतनी उमंग रहती है, न उतनी खिन्नता।बाल-मैत्री में जो मग्न करने वाला आनन्द होता है, जो हृदय को बेंधनेवाली ईर्ष्या और खिन्नता होती है, वह और कहाँ? कैसी मधुरता और कैसी अनुरक्ति होती है, कैसा अपार विश्वास होता है! हृदय के कैसे उद्‌गार निकलते हैं! वर्तमान कैसा आनन्दमय दिखाई पड़ता है और भविष्य के संबंध में कैसी लुभानेवाली कल्पनाएँ मन में रहतीहैं। कितनी जल्दी बातें लगती हैं और कितनी जल्दी मानना होता है।'सहपाठी की मित्रता' इस उक्ति में हृदय के कितने भारी उथल-पुथल का भाव भरा हुआ है।किन्तु जिस प्रकार युवा पुरुष की मित्रता स्कूल के बालक की मित्रता से दृढ़, शांत और गंभीर होती है, उसी प्रकार युवावस्था के

मित्र बाल्यावस्था के मित्रों से कई बातों में भिन्न होते हैं। मैं समझता हूँ कि मित्र चाहते हुए बहुत-से लोग मित्र के आदर्श की कल्पना मन में करते होंगे, पर इस कल्पित आदर्श से तो हमारा काम जीवन के झंझटों में चलता नहीं। सुन्दर प्रतिभा, मनभावनी चाल और स्वच्छंद प्रकृति, ये ही दो-चार बातें देखकर मित्रता की जाती है, पर जीवन-संग्राम में साथ देनेवाले मित्रों में इनसे कुछ अधिक बातें चाहिए। मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, पर जिससे हम स्नेह न कर सकें, जिससे अपने छोटे-छोटे काम ही हम निकालते जाएँ, पर भीतर-ही-भीतर घृणा करते रहें। मित्र सच्चे पथ-प्रदर्शक के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें।

मित्र भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति-पात्र बना सकें। हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए। ऐसी सहानुभूति जिससे एक के हानि-लाभ को दूसरा अपना हानि-लाभ समझे।मित्रता

के लिए यह आवश्यक नहीं है कि दो मित्र एक ही प्रकार का कार्य करते हों या एक ही रुचि के हों। प्रकृति और आचरण की समानता भी आवश्यक या वांछनीय नहीं है। दो भिन्न प्रकृति के मनुष्यों में बराबर प्रीति और मित्रता रही है। राम धीर और शांत प्रकृति के थे, लक्ष्मण उग्र और उद्धत स्वभाव के थे, पर दोनों भाइयों में अत्यन्त प्रगाढ़ स्नेह था। उन दोनों की मित्रता खूब निभी। यह कोई बात नहीं है कि एक ही स्वभाव और रुचि के लोगों में ही मित्रता हो सकती है। समाज में विभिन्नता देखकर लोग एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। जो गुण हममें नहीं हैं, हम चाहते हैं कि कोई ऐसा मित्र मिले, जिसमें वे गुण हों।चिन्ताशील मनुष्य प्रफुल्लित चित्त का साथ ढूँढ़ता है, निर्बल बली का, धीर उत्साही का। उच्च आकांक्षा वाला चन्द्रगुप्त युक्ति और उपाय के लिए चाणक्य का मुँह ताकता था। नीति-विशारद अकबर मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था।

मित्र का कर्तव्य इस प्रकार बताया गया है, "उच्च और महान कार्यों में इस प्रकार सहायता देना, मन बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी से बाहर काम कर जाओ।" यह कर्तव्य उसी से पूरा होगा, जो दृढ़ चित्त और सत्य-संकल्प का हो। इससे हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकडऩा चाहिए जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था। मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय के हों, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा।

जो बात ऊपर मित्रों के संबंध में कही गई है, वही जान-पहचान वालों के संबंध में भी ठीक है। जान-पहचान के लोग ऐसे हों, जिनसे हम कुछ लाभ उठा सकते हों, जो हमारे जीवन को उत्तम और आनन्दमय बनाने में कुछ सहायता दे सकते हों, यद्यपि उतनी नहीं जितनी गहरे मित्र दे सकते हैं।मनुष्य का जीवन थोड़ा है, उसमें खोने के लिए समय नहीं। यदि क, ख और ग हमारे लिए कुछ नहीं कर सकते, न कोई बुद्धिमानी या विनोद की बातचीत कर सकते हैं, न कोई अच्छी बात बतला सकते हैं, न सहानुभूति द्वारा हमें ढाढ़स बँधा सकते हैं, न हमारे आनन्द में सम्मिलित हो सकते हैं, न हमें कर्तव्य का ध्यान दिला सकते हैं, तो ईश्वर हमें उनसे दूर ही रखे। हमें अपने चारों ओर जड़ मूर्तियाँ सजानी नहीं हैं। आजकल जान-पहचान बढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं है। कोई भी युवा पुरुष ऐसे अनेक युवा पुरुषों को पा सकता है, जो उसके साथ थियेटर देखने जाएँगे, नाच रंग में जाएंगे, सैर-सपाटे में जाएंगे, भोजन का निमंत्रण स्वीकार करेंगे। यदि ऐसे जान-पहचान के लोगों से कुछ हानि न होगी तो लाभ भी न होगा। पर यदि हानि होगी तो बड़ी भारी होगी। सोचो तो तुम्हारा जीवन कितना नष्ट होगा।

यदि ये जान-पहचान के लोग उन मनचले युवकों में से निकलें, जो अमीरों की बुराइयों और मूर्खताओं की नकल किया करते हैं, दिन-रात बनाव सिंगार में रहा करते हैं, महिफलों में "ओ-हो-हो", "वाह-वाह" किया करते हैं, गालियों में ठट्ठा मारते हैं और सिगरेट का धुआँ उड़ाते हैं। ऐसे नवयुवकों से बढक़र शून्य, निस्सार और शोचनीय जीवन और किसका है? वे अच्छी बातों के सच्चे आनन्द से कोसों दूर हैं। उनके लिए न तो संसार में सुन्दर मनोहर उक्ति वाले कवि हुए हैं और न संसार में सुन्दर आचरण वाले महात्मा। उनके लिए न तो बड़े वीर अद्भुत कर्म कर गए हैं और न बड़े-बड़े ग्रन्थकार ऐसे विचार छोड़ गए हैं, जिनसे मनुष्य जाति के हृदय में सात्विकता की उमंगें उठती हैं। उनके लिए फूल-पत्तियों में कोई सौन्दर्य नहीं, झरनों के कल-कल में मधुर संगीत नहीं, अनंत सागर तरंगों में गंभीर रहस्यों का आभास नहीं, उनके भाग्य में सच्चे प्रयत्न और पुरुषार्थ का आनन्द नहीं, उनके भाग्य में सच्ची प्रीति का सुख और कोमल हृदय की शांति नहीं।जिनकी आत्मा अपने इंद्रिय-विषयों में ही लिप्त है, जिनका हृदय नीचाशयों और कुत्सित विचारों से कलुषित है, ऐसे नशोन्मुख प्राणियों को दिन-दिन अंधकार में पतित होते देख कौन ऐसा होगा जो तरस न खाएगा ? हमें ऐसे प्राणियों का साथ न करना चाहिए।

मकदूनिया का बादशाह डेमेट्रियस कभी-कभी राज्य के सब काम छोडक़र अपने ही मेल के दस-पाँच साथियों को लेकर मौका-मस्ती में लिप्त रहा करता था। एक बार बीमारी का बहाना करके इसी प्रकार वह अपने दिन काट रहा था। इसी बीच उसका पिता उससे मिलने के लिए गया और उसने एक हँसमुख जवान को कोठरी से बाहर निकलते देखा। जब पिता कोठरी के भीतर पहुँचा तब डेमेट्रियस ने कहा, "ज्वर ने मुझे अभी छोड़ा है।" पिता ने कहा, "हाँ, ठीक है, वह दरवाज़े पर मुझे मिला था।"

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बँधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-रात अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाती जाएगी।

इंग्लैंड के एक विद्वान को युवावस्था में राज-दरबारियों में जगह नहीं मिली। इस पर ज़िन्दगी भर वह अपने भाग्य को सराहता रहा।बहुत-से लोग तो इसे अपना बड़ा भारी दुर्भाग्य समझते, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पड़ता जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते। बहुत-से लोग ऐसे होते हैं, जिनके घड़ी भर के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, क्योंकि उतने ही बीच मे ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं जो कानों में न पड़नी चाहिए, चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं, जिनसे उसकी पवित्रता का नाश होता है।

बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं। इस बात को प्राय: सभी लोग जानते हैं कि भद्दे व फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं, उतनी जल्दी कोई गंभीर या अच्छी बात नहीं।

एक बार एक मित्र ने मुझसे कहा कि उसने लडक़पन में कहीं से बुरी कहावत सुनी थी, जिसका ध्यान वह लाख चेष्टा करता है कि न आए, पर बार-बार आता है। जिन भावनाओं को हम दूर रखना चाहते हैं, जिन बातों को हम याद करना नहीं चाहते, वे बार-बार हृदय में उठती हैं और बेंधती हैं। अत: तुम पूरी चौकसी रखो, ऐसे लोगों

को साथी न बनाओ जो अश्लील, अपवित्र और फूहड़ बातों से तुम्हें हँसाना चाहें। सावधान रहो।ऐसा न हो कि पहले-पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा अथवा तुम्हारे चरित्र बल का ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातें कहने वाले आगे चलकर आप सुधर जाएंगे। नहीं, ऐसा नहीं होगा।जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे-धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते-होते तुम्हारी घृणा कम हो जाएगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी, क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है। तुम्हारा विवेक कुंठित हो जाएगा और तुम्हें भले-बुरे की पहचान न रह जाएगी। अंत में होते-होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे। अत: हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगति की छूत से बचो। एक पुरानी कहावत है—

“काजल की कोठरी में कैसो ही सयानो जाय।
एक लीक काजल की लागि है पै लागि है।”

शब्दार्थ

परिणत होना = बदल जाना;

संगति = साथ;

हेल-मेल = मेल-जोल, घनिष्ठता;

अपरिमार्जित = जो साफ सुथरा न हो;

अपरिपक्व = जो पका न हो, अविकसित;

दृढ़ संकल्प = पक्का इरादा;

विवेक = अच्छे-बुरे को पहचानने की क्षमता;

अनुसंधान = खोज, पड़ताल;

चटपट = फटाफट, जल्दी-जल्दी;

आत्मशिक्षा = जीवन-ज्ञान;

संकल्प = निश्चय;

मर्यादा = जीवन अनुशासन;

हतोत्साहित = जिसमें उत्साह न हो;

उत्साहित = उत्साह, हौंसला;

निपुण = कुशल, प्रवीण;

उमंग = रोमांच;

खिन्नता = खीजना, चिढ़ जाना;

अनुरक्ति = लीन होना, जुड़ना, लगाव;

उथल-पुथल = हलचल;

जीवन-संग्राम = जीवन संघर्ष;

स्नेह = प्रेम-प्यार;

प्रीति-पात्र = कृपा-पात्र;

चिन्ताशील = परेशान;

उच्च आकांक्षा = उत्कृष्ट इच्छा;

युक्ति = तरीका;

वांछनीय = अपेक्षित;

कर्तव्य = फर्ज़;

दृढ़ चित्त = पक्का इरादा;

सत्य-संकल्प = शुभ-विचार;

प्रतिष्ठित = स्थापित;

पुरुषार्थ = परिश्रम;

सत्यनिष्ठ = सत्य पर अडिग रहने वाला, सत्यवान;

मनचला = छिछला;

शोचनीय = चिंताजनक;

सामर्थ्य = योग्यता;

नीति विशारद = नीति-निपुण, नीतिवान;

आत्मबल = नैतिक शक्ति;

मृदुल = कोमल, नम्र;

शिष्ट = सभ्य, सदाचारी;

विनोद = मनोरंजन;

निस्सार = सारहीन,व्यर्थ;

सात्विकता = सात्विक होने का भाव;

अनंत = जिसका अंत नहीं होता;

गंभीर = गहन;

रहस्य = छिपा हुआ;

इंद्रिय-विषय = इन्द्रियों से सम्बन्धित;

नीचाशय = घटिया इरादे;

कुत्सित विचार = बुरे विचार;

कलुषित = दूषित;

कुसंग = बुरी-संगत;

क्षय = हानि, कम होना;

अवनति = पतन;

चेष्टा = प्रयत्न;

बेंधना = घाव करना;

चौकसी = सावधानी;

अभ्यस्त = निपुण;

कुंठित = अप्रखर, अक्षम, कमज़ोर , मद्धम;

निष्कलंक = बिना कलंक के, पवित्र।

अभ्यास (क) विषय-बोध

I.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्तियों में दीजिए :—

1.घर से बाहर निकलकर बाहरी संसार में विचरने पर युवाओं के सामने पहली कठिनाई क्या आती है ?

उत्तर—युवाओं के सामने पहली कठिनाई मित्र चुनने की आती है।

2.हमसे अधिक दृढ़ संकल्प वाले लोगों का साथ बुरा हो सकता है?

उत्तर—क्योंकि हमसे अधिक दृढ़ विचार वाले लोगों की हर बात न चाहते हुए भी हमें मान लेनी पड़ती है।

3.आजकल लोग दूसरों में कौन-सी दो चार बातें देखकर चटपट उसे अपना मित्र बना लेते है?

उत्तर—हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस- किसी में ये दो चार बातें देखकर लोग उसे अपना मित्र बना लेते हैं।

4.किस प्रकार के मित्र से भारी रक्षा रहती है?

उत्तर—विश्वासपात्र मित्र से भारी रक्षा करती है क्योंकि ऐसा मित्र किसी खज़ाने से कम नहीं होता।

5.चिंताशील, निर्बल तथा धीर पुरुष किस प्रकार का साथ ढूँढ़ते हैं?

उत्तर—चिंताशील मनुष्य सदा खुश रहने वाले व्यक्ति का, निर्बल शक्तिशाली व्यक्ति का तथा धीर पुरुष उत्साही व्यक्ति का साथ ढूँढ़ते हैं।

6.उच्च आकांक्षा वाला चंद्रगुप्त युक्ति व उपाय के लिए किसका मुँह ताकता था?

उत्तर—उच्च आकांक्षा वाला चंद्रगुप्त युक्ति व उपाय के लिए सदा चाणक्य का मुँह ताकता था।

7.नीति-विशारद अकबर मन बहलाने के लिए किसकी ओर देखता था ?

उत्तर—नीति-विशारद अकबर अपना मन बहलाने के लिए बीरबल की ओर देखता था।

8.मकदूनिया के बादशाह डेमेट्रियस के पिता को दरवाज़े पर कौन सा ज्वर मिला था ?

उत्तर—मकदूनिया के बादशाह डेमेट्रियस के पिता को दरवाज़े पर मौज-मस्ती में बादशाह के साथ संलिप्त रहने वाला कुसंगति रूपी एक हंसमुख जवान नामक ज्वर मिला था।

9.राज दरबार में जगह न मिलने पर इंग्लैड का एक विद्वान अपने भाग्य को क्यों सराहता रहा ?

उत्तर—वह अपने भाग्य को इसलिए सराहता रहा क्योंकि वह राजदरबार के बुरे लोगों के सम्पर्क से बच गया जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधा बनते।

10.हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय क्या है?

उत्तर—हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि सदा बुरी संगति से बचा जाये।

॥.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दीजिए :—

1.विश्वासपात्र मित्र को खज़ाना, औषध और माता जैसा क्यों कहा गया?

उत्तर—विश्वासपात्र मित्र खज़ाने के समान है क्योंकि वह ज़रूरत के समय काम आता है। विश्वासपात्र मित्र को औषध इसलिए कहा गया है क्योंकि वह हमारी बुराइयों को उसी तरह दूर कर देता है जैसे दवा बीमारी को दूर कर देती है। विश्वासपात्र मित्र को माता इसलिए कहा गया है क्योंकि वह माता के समान धीरज वाला और नि:स्वार्थी होता है।

2.अपने से अधिक आत्मबल रखने वाले व्यक्ति को मित्र बनाने से क्या लाभ है?

उत्तर—अपने से अधिक आत्मबल रखने वाले व्यक्ति को मित्र बनाने से महान कार्यों को करने में सहायता मिलती है। ऐसा व्यक्ति मुसीबत के समय सहारा देकर हमारा मनोबल बढ़ाता है।

3.लेखक ने युवाओं के लिए कुसंगति और सत्संगति की तुलना किससे की और क्यों?

उत्तर—लेखक ने युवाओं के लिए कुसंगति को पैरों में बंधी चक्की के समान कहा है क्योंकि वह मनुष्य की उन्नति को रोककर उसे अवनति की ओर ले जाती है। जबकि लेखक ने सत्संगति को सहारा देने वाली बाहु के समान बताया है क्योंकि वह हमें सदैव उन्नति की ओर ले जाती है।

II.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर छह या सात पंक्तियों में दीजिए :—

1.सच्चे मित्र के कौन-कौन से गुण लेखक ने बताए हैं ?

उत्तर—(i) सच्चा मित्र विश्वास के योग्य होना चाहिए।

(ii) वह उत्तम वैद्य के समान कुशल व पारखी होना चाहिए।

(iii) उसमें माँ जैसी कोमलता व धीरज होना चाहिए।

(iv) वह सच्चा पथ-प्रदर्शक होना चाहिए।

(v) वह बलवान और साहसी होना चाहिए।

(vi) वह दयालु , मेहनती , सभ्य और सच बोलने वाला होना चाहिए।

2.बाल्यावस्था और युवावस्था की मित्रता के अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—लेखक बाल्यावस्था और युवावस्था की मित्रता में अंतर बताते हुए कहता है कि बाल्यावस्था की मित्रता में एक ओर मग्न करने वाला आनन्द होता है तो दूसरी ओर मन को बेंधने वाली ईर्ष्या और खिन्नता होती है। इस अवस्था में वर्तमान आनन्दमय व भविष्य की कल्पनाओं से भरा होता है। बाल्यावस्था में एकदम से रूठना व मनाना भी लगा रहता है किन्तु युवावस्था की मित्रता बाल्यावस्था की अपेक्षा दृढ़, शांत और गंभीर होती है।

3.दो भिन्न प्रकृति के लोगों में परस्पर प्रीति और मित्रता बनी हो सकती है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर— लेखक के अनुसार दो भिन्न प्रकृति के लोगों में परस्पर प्रीति और मित्रता हो सकती है जैसे धीर और शांत स्वभाव के राम तथा उग्र स्वभाव वाले लक्ष्मण में गहरी प्रीति और मित्रता थी। उच्च आकांक्षा वाले चन्द्रगुप्त और नीतिवान चाणक्य में भी प्रीति थी। इसी प्रकार मुगल सम्राट अकबर और बीरबल में भिन्न स्वभाव के होते हुए भी बहुत प्रीति थी। अकबर नीति में कुशल व बीरबल हँसी-मज़ाक प्रकृति के थे। अत: यह आवश्यक नहीं है कि मित्रता व प्रीति में प्रकृति की समानता होनी चाहिए ।

4.मित्र का चुनाव करते समय हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर—मित्र का चुनाव करते समय हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :

(i) मित्र बनाते समय हमें विवेक से काम लेना चाहिए।

(ii) उसके पूर्व आचरण के बारे में पता लगा लेना चाहिए।

(iii) उसके स्वभाव को जान लेना चाहिए।

(iv) बुरे विचारों वाले से सदा दूर रहना चाहिए।

(v) उसकी समझदारी की जाँच कर लेनी चाहिए।

5.बुराई अटल भाव धारण करके बैठती हैं? क्या आप लेखक की इस उक्ति से सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—निस्संदेह बुराई अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिक जाती हैं। शुरू में बुरी व फूहड़ बातें सामान्य लगती हैं परन्तु आगे चलकर वे जीवन में घर कर जाती हैं और हमारी आदत-स्वभाव का हिस्सा बन जाती हैं। उस समय बुराई के कीचड़ के कीचड़ में फँसकर व्यक्ति का विवेक कुंठित हो जाता है। वह अच्छे-बुरे की पहचान खो देता हैं। अत: मन को पवित्र व कलंक से दूर रखने के लिए बुराई से सदा बचकर रहना चाहिए।

(ख) भाषा-बोध

I. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :—

शब्द	भाववाचक संज्ञा	शब्द	भाववाचक संज्ञा
मित्र	मित्रता	बुरा	बुराई
कोमल	कोमलता	अच्छा	अच्छाई
शांत	शांति	निपुण	निपुणता
लड़का	लड़कपन	दृढ़	दृढ़ता

II.निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए :—

वाक्यांश		वाक्यांश के लिए एक शब्द
जिसका सत्य में दृढ़ विश्वास हो	—	सत्यनिष्ठ
जो नीति का ज्ञाता हो	—	नीतिवान, नीतिज्ञ
जिस पर विश्वास किया जा सके	—	विश्वसनीय
जो मन को अच्छा लगता हो	—	मनभावन, मनोरम
जिसका कोई पार न हो	—	अपार, अपरम्पार

III.निम्नलिखित में संधि कीजिए :

शब्द	संधि	शब्द	संधि
युवा + अवस्था	= युवावस्था	बाल्य + अवस्था	= बाल्यावस्था
नीच + आशय	= नीचाशय	महा + आत्मा	= महात्मा
नशा + उन्मुख	= नशोन्मुख	वि + अवहार	= व्यवहार
हत + उत्साहित	= हतोत्साहित	प्रति + एक	= प्रत्येक
सह + अनुभूति	= सहानुभूति	पुरुष + अर्थी	= पुरुषार्थी

IV.निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह कीजिए :—

समस्त पद	विग्रह	समस्त पद	विग्रह
नीति-विशारद=	नीति में विशारद	सत्यनिष्ठा	= सत्य में निष्ठा
राजदरबारी=	राजा का दरबारी	जीवन-निर्वाह	= जीवन का निर्वाह
पथप्रदर्शक =	पथ का प्रदर्शक	जीवन-संग्राम	= जीवन का संग्राम
स्नेह बंधन =	स्नेह का बंधन		

मुहावरा	अर्थ	वाक्य:
कच्ची मिट्टी की मूर्ति	परिवर्तित होने योग्य	बालक कच्ची मिट्टी की मूर्ति होते हैं, उन्हें जैसा रूप देंगे, वैसे बन जाएंगे।
खज़ाना मिलना	अधिक मात्रा में धन मिलना	सच्चा मित्र मिलना खज़ाना मिलने से कम नहीं होता।
जीवन की औषधि होना	जीवन रक्षा का साधन	विश्वासपात्र जीवन की औषध होता है।
मुँह ताकना	आशा लगाए बैठना	बेटा ! अपने पर भरोसा रखना सीखो,छोटी-छोटी बातों पर दूसरों का मुँह ताकना अच्छा नहीं है।

मुहावरा	अर्थ	वाक्य:
ठट्ठा मारना	ठठोली करना, हँसी,मज़ाक करना	बेटा ! कुछ काम-काज भी करोगे या दिन भर ठट्ठा मारकर ही बिताओगे ?
पैरों में बँधी चक्की	पाँव की बेड़ी	बेटा ! याद रखना, बुरी संगति तो पैरों में बंधी चक्की होती है जो एक दिन व्यक्ति को गर्त में गिरा ही देती है।
घड़ी भर का साथ	थोड़ी देर का साथ	मित्र ! मैं तुम्हारा घड़ी भर का साथ नहीं अपितु जीवन भर साथ दूंगा।

(ग) ज्ञान-विस्तार

राम-सुग्रीव—राम अयोध्या के राजा दशरथ और रानी कौशल्या के सबसे बड़े पुत्र थे। इनके तीन भाई थे-लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न। हनुमान, भगवान राम के सबसे बड़े भक्त माने जाते है। हनुमान के कारण ही किष्किंधा के राजा बालि के छोटे भाई सुग्रीव की मित्रता राम से हुई तब सुग्रीव अपने बड़े भाई बालि के भय से ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान तथा कुछ अन्य वानर सेनापतियों के साथ रह रहा था। श्री राम ने सुग्रीव से मित्रता निभाते हुए सुग्रीव के साथ हुए अन्याय को दूर करने में सहायता की तथा उसमें आत्मबल का संचार किया। सुग्रीव भी सीता की खोज में श्री राम के सहायक बने।

चन्द्रगुप्त-चाणक्य—चन्द्रगुप्त मौर्य भारत के चक्रवर्ती सम्राट थे। इन्होंने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की थी। चन्द्रगुप्त एक कुशल योद्धा, सेनानायक तथा महान विजेता ही नहीं था वरन एक योग्य शासक भी था अपने मंत्री चाणक्य (कौटिल्य) की सहायता से उसने ऐसी शासन व्यवस्था का निर्माण किया, जो उस समय के अनुकूल थी। वास्तव में चाणक्य को मौर्य साम्राज्य का संस्थापक और संरक्षक माना जाता है। किवदंती के अनुसार एक बार मगध के राजा महानंद द्वारा अपमानित किए जाने पर चाणक्य ने नंदवंश का नाश करने का प्रण किया। नंदवंश के विनाश के बाद उसने चंद्रगुप्त मौर्य को राजगद्दी पर बैठाने में हर संभव सहायता की। चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा गद्दी पर आसीन होने के बाद उसे पराक्रमी बनाने और मौर्य साम्राज्य का विस्तार करने के उद्देश्य से उसने व्यावहारिक राजनीति में प्रवेश किया। उनके द्वारा रचित अर्थशास्त्र मौर्यकालीन भारतीय समाज का दर्पण माना जाता है।

अकबर-बीरबल—मुगल सम्राट अकबर एक उदार शासक के रूप में इतिहास में दर्ज हैं। तेरह वर्ष की आयु में ही इन्होंने राजपाट सम्भाल लिया था। उस समय बैरम खां नाम का मंत्री इनका संरक्षक बना था। अकबर ने मुगल परम्परा के विपरीत समन्वय और उदार नीति अपनाई। अकबर के दरबारी रत्नों (नवरत्नों) में हिन्दू मंत्री बीरबल हाज़िर जवाब और कुशल मंत्री था। बीरबल अपनी बुद्धिमानी और समझदारी के कारण बादशाह अकबर का स्नेहपात्र था। अकबर इन्हें सदा अपने साथ रखता था और प्रत्येक काम में इनकी सलाह लिया करता था। अकबर बीरबल का सम्बन्ध और बीरबल की वाक् चातुरी, हाजिर जवाबी लोक-जीवन में काफी चर्चित है।

मकदूनिया (Macedonia) —मकदूनिया यूनान (ग्रीक) का एक प्रसिद्ध गणराज्य, जहाँ के राजा सिकन्दर महान (Alexander the great हुए है। यूनान के अन्य दो राज्य-एथेन्स और स्पार्टा थे। एथेन्स का ज्ञान-विज्ञान में बोलबाला था। महान दार्शनिक सुकरात (Socrotes) यहीं के थे परन्तु स्वतंत्र विचार रखने के कारण वहाँ के शासन ने इनको जेल में डाल दिया था, जहाँ ज़हर का प्याला पीने के कारण इनकी मृत्यु हुई थी। इन्हीं के शिष्य प्लेटो (Plato) और प्लेटो के शिष्य अरस्तु (Aristotle) हुए है। अरस्तु के पिता मकदूनिया के राजवैद्य थें। सुकरात की मृत्यु के बाद प्लेटो नें आदर्श गणराज्य बनाने के लिए एक विद्यापीठ की स्थापना की थी। अरस्तु इसी विद्यापीठ का होनहार विलक्षण विद्यार्थी रहा है।

धन्यवाद

डॉ.सुनील बहल

एम.ए.(संस्कृत,हिंदी),एम.एड.,पीएच.डी(हिंदी)